5

संस्कृत-शिक्षण के उद्देश्य

हमारे देश में संस्कृत का पठन-पाठन दो प्रकार से होता है—एक तो पाठशालाओं में, दूसरे, वर्तमान शिक्षा-प्रणाली में। पाठशालाओं में संस्कृत की कथाएँ 'प्रथमा' से आरम्भ होती हैं और 'आचार्य' तक चलती हैं। 'प्रथमा' कक्षा में छात्र प्रारम्भिक विद्यालय तक मातृभाषा का अध्ययन करने के बाद प्रविष्ट होता है और इसीलिए 'प्रथमा' को जूनियर हाईस्कूल के समकक्ष माना जाता है। इसके पश्चात् पूर्व मध्यमा हाईस्कूल के समकक्ष और उत्तर मध्यमा इण्टर के समकक्ष की परीक्षाएँ हैं। 'शास्त्री' और 'आचार्य' की उपाधियाँ क्रमशः बी० ए० और एम० ए० के समान हैं, किन्तु संस्कृत के ज्ञान की दृष्टि से कहीं ऊँची उपाधियाँ हैं। पाठशालाओं में ज्ञान-विज्ञान के आधुनिक विषयों का भी अध्यापन होता है। संस्कृत का अध्यापन यहाँ पर बड़े गहन रूप में होता है और अधिकतर विषयों का अध्यापन संस्कृत के ही माध्यम से होता है। उत्तर प्रदेश में ये सभी पाठशालाएँ वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय से सम्बद्ध हैं।

वर्तमान शिक्षा-प्रणाली में संस्कृत का अध्ययन विभिन्न राज्यों में विभिन्न कक्षाओं से आरम्भ होता है, किन्तु प्रारम्भिक विद्यालयों में कहीं पर भी संस्कृत का अध्यापन नहीं होता। यह ठीक भी है, क्योंकि प्रारम्भिक विद्यालयों में छात्रों को सर्वप्रथम मातृभाषा का अच्छी तरह से ज्ञान कराना चाहिए। मातृभाषा के ज्ञान के आधार पर संस्कृत का अध्ययन सुगम हो जायेगा। उत्तर प्रदेश में संस्कृत का पठन-पाठन छठी कक्षा से प्रारम्भ होता है। छठी कक्षा से लेकर एम० ए० कक्षा तक के पाठ्यक्रम में उत्तर प्रदेश में संस्कृत का एक स्वतन्त्र वैकल्पिक विषय के रूप में महत्वपूर्ण स्थान है।

संस्कृत-शिक्षण के तीन स्तर

आधुनिक विद्यालयों में संस्कृत-शिक्षण की दृष्टि से हम शैक्षिक स्तरों को तीन वर्गों में रख सकते हैं—

(1) प्रारम्भिक स्तर।
(2) मध्य स्तर।
(3) उच्च स्तर।

प्रारम्भिक स्तर से यहाँ पर प्रारम्भिक पाठशालाओं का भ्रम नहीं होना चाहिए। प्रारम्भिक स्तर का यहाँ पर तात्पर्य संस्कृत-शिक्षण के प्रारंम्भिक स्तर से है और इस स्तर में कक्षा 6, 7 और 8 रख सकते हैं।

Scanned with CamScanner

मध्य स्तर में माध्यमिक कक्षाएँ अर्थात् 9, 10, 11 और 12 आ सकती हैं तथा उसके पश्चात् उच्च स्तर आता है और उच्च स्तर पर विश्वविद्यालय की अन्तिम परीक्षा तक हो सकती है।

उपर्युक्त तीनों स्तरों पर संस्कृत-शिक्षा के उद्देश्य समान नहीं होगें। यहाँ प्रत्येक स्तर पर संस्कृत-शिक्षण के उद्देश्यों का उल्लेख किया जा रहा है।

प्रारम्भिक स्तर पर संस्कृत-शिक्षण के उद्देश्य

प्रारम्भिक स्तर अर्थात् कक्षा 6, 7 और 8 के छात्र बाल्यावस्था के अन्तिम भाग या किशोरावस्था में पर्दापण करने की तैयारी में रहते हैं। जहाँ पर मानसिक दृष्टि से उसके मन में बड़ी उथल-पुथल मची रहती है, यहाँ पर उन्हें उपयुक्त आदर्शों की आवश्यकता भी पड़ती है। संस्कृत साहित्य ऐसे आदर्शों से भरा पड़ा है, अतः यदि छात्रों को उचित प्रेरणा प्रदान कर दी जाय तो संस्कृत भाषा को बड़े चाव से पढ़ेंगे, किन्तु यहाँ पर यह ध्यान रखने की बात है कि छात्र इस समय संस्कृत को प्रारम्भ करते हैं, अतः उनसे बहुत अधिक आशा नहीं करनी चाहिए। इस स्तर पर तो इतने से ही सन्तुष्ट हो जाना चाहिए कि छात्र सरल संस्कृत को पढ़ सकें व उसे समझ सकें। इस स्तर पर संस्कृत-शिक्षण के उद्देश्य संक्षेप में इस प्रकार हैं—

(1) छात्रों को इस योग्य बनाना कि वे संस्कृत भाषा में लिखे हुए सरल गद्य-खण्डों को शुद्ध-शुद्ध पढ़ सकें।

(2) उन्हें इस योग्य बनाना कि वे सरल संस्कृत श्लोकों का शुद्ध उच्चारण करते हुए पाठ कर सकें।

(3) उन्हें कुछ महत्वपूर्ण श्लोकों को कंठस्थ करने की प्रेरणा देना।

(4) उन्हें इस योग्य बनाना कि वे संस्कृत के कठिन से कठिन गद्य-खण्डों एवं श्लोकों के मुद्रित रूप को देखकर उन्हें ठीक-ठीक अपनी पुस्तिकाओं में लिख सकें।

(5) छात्रों में यह योग्यता भी उत्पन्न करना कि वे कण्ठस्थ किये हुए श्लोकों को उनके मुद्रित रूप के देखे बिना शुद्ध-शुद्ध लिख सकें।

(6) उन्हें श्रुतिलेख लिखने का अभ्यास कराना।

(7) उन्हें इस योग्य बनाना कि वे मातृभाषा के सरल वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कर सकें।

(8) संस्कृत के सरल गद्य-खण्डों एवं सरल श्लोकों को समझने की योग्यता प्रदान करना।

(9) छात्रों को यह योग्यता प्रदान करना कि वे आवश्यकतानुसार सरल संस्कृत वाक्यों एवं श्लोकों का मातृभाषा में अनुवाद सकें।

मध्य स्तर पर संस्कृत-शिक्षण के उद्देश्य

मध्य स्तर पर आने वाले छात्र प्रारम्भिक स्तर पर कक्षा 6, 7 व 8 में संस्कृत को पढ़ चुके होते हैं। उनमें यह योग्यता आ जाती है कि वे संस्कृत के सरल गद्य-खण्डों एवं श्लोकों को शुद्ध-शुद्ध पढ़ सकें। इस स्तर पर छात्रों को संस्कृत साहित्य का भी परिचय देना चाहिए, किन्तु भाषा की शिक्षा इस स्तर पर भी महत्त्वपूर्ण रहेगी। इस स्तर पर संस्कृत-शिक्षण के उद्देश्य इस प्रकार हैं—

Scanned with CamScanner

(1) संस्कृत के सरल ही नहीं, कठिन गद्य-खण्डों को उचित विराम एवं शुद्ध उच्चारण के साथ पढ़ने की क्षमता प्रदान करना जिससे छात्र संस्कृत भाषा में लिखे हुए बड़े-से बड़े वाक्यों को भी उचित अन्वितियों में विभक्त करके पढ़ सकें और कहीं ऐसा न हो कि वे "अस्ति गोदावरी तीरे विशालः शाल्मली तरु" के स्थान पर "अस्तिगोदावरी तीरेवि शालः....." जैसा पढ़कर गद्य-खण्ड को निरर्थक कर दें।

(2) संस्कृत श्लोकों को उचित लय, मात्रा एवं विराम का ध्यान रखकर पढ़ने की योग्यता प्रदान करना जिससे वे मालिनी, शिखरिणी, द्रुत-विलम्बित, इन्द्रवज्रा, भुजंगप्रयात आदि छन्दों के पाठ में अन्तर कर सकें।

(3) संस्कृत के सरल साहित्य से छात्रों को परिचित कराया जाय जिससे वे संस्कृत साहित्य के अक्षय कोष में कुछ रत्न स्वयं प्राप्त कर सकें और आनन्द की अनुभूति कर सकें।

(4) संस्कृत के महत्त्वपूर्ण श्लोकों को कण्ठस्थ करने की प्रेरणा इस स्तर पर भी दी जाय, ताकि मातृभाषा के माध्यम से अपने वार्तालाप में आवश्यकता पड़ने पर अपनी बात की सम्पुष्टि में वाणी को प्रभावोत्पादक बनाने की दृष्टि से संस्कृत के श्लोकों का उद्धरण दे सकें।

(5) संस्कृत साहित्य के सरल अंशों को मातृभाषा में अनूदित करने की क्षमता प्रदान करना जिससे वे जन-समुदाय को संस्कृत-साहित्य के अमृत का पान कर सकें।

(6) मातृभाषा के सरल अनुच्छेदों एवं सामान्य वाक्यों की संस्कृत में अनूदित करने की योग्यता प्रदान करना।

(7) सरल विषयों पर संस्कृत भाषा में संक्षिप्त निबन्ध के रूप में कुछ वाक्य लिखने की क्षमता प्रदान करना।

(8) यदि सम्भव हो तो संस्कृत में कुछ सरल वाक्यों में बोलने की क्षमता प्रदान करना जिससे वे अभीष्ट अवसरों पर सरल रीति से संस्कृत भाषा में कुछ वाक्य शुद्ध रूप में बोल सकें।

यहाँ पर यह ध्यान देने की बात है कि संस्कृत में बोलने की क्षमता प्रदान करना संस्कृत-शिक्षण का मध्य स्तर पर उद्देश्य नहीं बनाया गया। वर्तमान परिस्थितियों में यह सम्भव भी नहीं है। अनेकानेक विषयों के जाल में फँसे हुए छात्र से यह आशा करना कि वह संस्कृत में 'शुद्ध, प्रभावोत्पादक, मधुर एवं रमणीय ढंग से बोल सकेगा' ठीक नहीं है। इसकी कोई आवश्यकता भी नहीं है। आज संस्कृत जन-साधारण की बोलचाल की भाषा नहीं है और किसी को भी समाज में प्रत्येक अवसर पर संस्कृत बोलने की आवश्यकता प्रतीत नहीं होती।

यह भी ध्यान देने की बात है कि तीसरे तथा पाँचवें उद्देश्यों में संस्कृत के सरल साहित्य का उल्लेख किया गया है। इस दृष्टि से पंचतन्त्र, हितोपदेश, वाल्मीकि रामायण, महाभारत तथा कालिदास की रचनाएँ अधिक महत्त्वपूर्ण समझ पड़ती हैं। भारवि, माघ आदि को तो इस स्तर पर समझना भी कठिन है।

Scanned with CamScanner